

Dr. Sarita Devi
Assistant Professor
Department of Psychology
Maharaja College, Ara

ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (Autism Spectrum Disorder - ASD)

ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD) एक जटिल न्यूरोलॉजिकल और विकास संबंधी विकार है, जो व्यक्ति के सामाजिक कौशल, संचार और व्यवहार को प्रभावित करता है। इसे "स्पेक्ट्रम" कहा जाता है क्योंकि यह अलग-अलग व्यक्तियों में अलग-अलग तरीकों से प्रकट होता है

1. ऑटिज़्म के प्रकार

पहले, ऑटिज़्म को विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया जाता था, लेकिन अब ये सभी ASD के अंतर्गत आते हैं:

- I. क्लासिकल ऑटिज़्म (Classical Autism): इसमें व्यक्ति में संचार और सामाजिक कौशल की गंभीर समस्याएं होती हैं।
- II. एस्परगर सिंड्रोम (Asperger Syndrome): इसमें बौद्धिक क्षमता सामान्य होती है, लेकिन सामाजिक संपर्क में कठिनाई होती है।
- III. पीडीडी-एनओएस (PDD-NOS - Pervasive Developmental Disorder-Not Otherwise Specified): यह हल्के और गंभीर लक्षणों के बीच होता है।
- IV. चाइल्डहुड डिसइंटीग्रेटिव डिसऑर्डर (Childhood Disintegrative Disorder): यह दुर्लभ है और इसमें बच्चा 2-4 साल तक सामान्य रहता है, लेकिन फिर उसकी क्षमताएँ धीरे-धीरे कम होने लगती हैं।

2. ऑटिज़्म के कारण

वैज्ञानिक अभी तक इसके सटीक कारणों को नहीं समझ पाए हैं, लेकिन कुछ प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं:

- I. अनुवांशिक (Genetic) कारण: यदि परिवार में किसी को ऑटिज़्म है, तो जोखिम बढ़ सकता है।
- II. मस्तिष्क का विकास: न्यूरोलॉजिकल असामान्यताओं के कारण मस्तिष्क का कार्य प्रभावित हो सकता है।
- III. गर्भावस्था के दौरान समस्याएँ: गर्भावस्था में संक्रमण, प्रदूषण, दवाइयाँ या अन्य कारक ऑटिज़्म के जोखिम को बढ़ा सकते हैं।
- IV. पर्यावरणीय कारण: कुछ शोधों के अनुसार, विषाक्त पदार्थों (toxins) या प्रदूषण का प्रभाव भी इसके पीछे हो सकता है।



3. ऑटिज़्म के लक्षण

(i) सामाजिक और संचार संबंधी समस्याएँ:

- आँखों से संपर्क न करना
- दूसरों की भावनाओं को न समझ पाना
- बोलने में देरी या बिल्कुल न बोलना
- बातचीत शुरू करने या जारी रखने में कठिनाई
- चेहरे के हावभाव और संकेतों को न समझ पाना

(ii) व्यवहार और रुचियों में विशेषताएँ:

- किसी एक चीज़ में अत्यधिक रुचि (जैसे गाड़ियों, पंखों, गणित, या किसी विशेष विषय में)
- एक ही क्रिया को बार-बार दोहराना (जैसे हाथ हिलाना, घूमना, किसी शब्द को बार-बार कहना)
- दिनचर्या में बदलाव पसंद न करना
- तेज़ रोशनी, आवाज़, या स्पर्श के प्रति असामान्य प्रतिक्रिया

4. ऑटिज़्म का निदान कैसे किया जाता है?

ऑटिज़्म का कोई लैब टेस्ट नहीं होता, चिकित्सक बच्चे की व्यवहारिक प्रवृत्तियों का अध्ययन कर ऑटिज़्म की पहचान करते हैं। चिकित्सक निम्नलिखित तरीकों से इसका मूल्यांकन करते हैं:

- I. मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन (Psychological Evaluation)
- II. विकासात्मक परीक्षण (Developmental Screening)
- III. स्पीच और लैंग्वेज असेसमेंट (Speech & Language Assessment)
- IV. सेंसरी प्रोसेसिंग असेसमेंट (Sensory Processing Assessment)



5. ऑटिज़्म का उपचार और प्रबंधन

(i) चिकित्सा और थेरेपी:

ऑटिज़्म का कोई स्थायी इलाज नहीं है, लेकिन उचित थेरेपी और प्रशिक्षण से व्यक्ति के जीवन को बेहतर बनाया जा सकता है।

- व्यवहार चिकित्सा (Applied Behavior Analysis - ABA): यह थेरेपी बच्चों को सही व्यवहार सिखाने में मदद करती है।
- स्पीच थेरेपी (Speech Therapy): बोलने और संवाद करने में सुधार लाती है।
- ऑक्यूपेशनल थेरेपी (Occupational Therapy): व्यक्ति को दैनिक कार्यों में स्वतंत्र बनाती है।
- सेंसरी थेरेपी (Sensory Integration Therapy): व्यक्ति की संवेदनशीलता (जैसे आवाज़, रोशनी, स्पर्श) को नियंत्रित करने में मदद करती है।
- विशेष शिक्षा (Special Education): शिक्षा प्रणाली को व्यक्ति की जरूरतों के अनुसार अनुकूल बनाया जाता है।

(ii) जीवनशैली और देखभाल:

- माता-पिता और शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण लेना चाहिए।
- बच्चे के साथ धैर्यपूर्वक व्यवहार करना ज़रूरी है।
- अन्य बच्चों और समाज के साथ मेल-जोल बढ़ाने के लिए सहयोग देना चाहिए।
- सही आहार और व्यायाम से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर किया जा सकता है।

6. ऑटिज़्म से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण तथ्य:

- ऑटिज़्म लड़कों में लड़कियों की तुलना में अधिक पाया जाता है।
- हर व्यक्ति में इसके लक्षण अलग-अलग हो सकते हैं।
- सही समय पर उपचार मिलने से बच्चे का विकास बेहतर हो सकता है।
- ऑटिज़्म से ग्रसित कई लोग विशिष्ट क्षेत्रों में अत्यधिक प्रतिभाशाली होते हैं (जैसे गणित, संगीत, या चित्रकला)।



7. समाज में जागरूकता क्यों ज़रूरी है?

ऑटिज़्म को लेकर समाज में कई गलतफहमियाँ हैं। लोग इसे मानसिक बीमारी समझ लेते हैं, जबकि यह एक न्यूरोलॉजिकल स्थिति है। जागरूकता से:

- लोगों में सहानुभूति और समझ बढ़ेगी।
- ऑटिज़्म से ग्रसित व्यक्तियों को बेहतर अवसर मिलेंगे।
- माता-पिता और शिक्षकों को सही जानकारी मिलेगी, जिससे वे बच्चों की बेहतर मदद कर सकेंगे।

निष्कर्ष

ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD) कोई बीमारी नहीं, बल्कि एक न्यूरोलॉजिकल अंतर है। हर व्यक्ति की क्षमताएँ और ज़रूरतें अलग होती हैं, और सही समर्थन से वे भी समाज में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। जागरूकता, धैर्य और सही दृष्टिकोण से ऑटिज़्म से ग्रसित व्यक्तियों को एक खुशहाल और आत्मनिर्भर जीवन जीने में मदद की जा सकती है।

